बारा कलिमा तौरात शरीफ से

शैख मुहम्मद इशाक मुलतानी.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे
भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

हजरत अली (रदी) ने फरमाया मैने अल्लाह की किताब तौरात शरीफ से बारा कलिमात चुने हे और हर रोज मे उनमे तीन बार गौर करता हू और वो कलिमात ये हे.

१. अल्लाह फरमाते हे ए इन्सान तू कभी किसी शैतान और हाकिम से ना डर जब तक मेरी बादशाहत बाकी हे.

२. ए इन्सान तू खाने पीने की फिक्र ना कर जब तक मेरे खजाने को भरा हुवा पाता है और मेरा खजाना हरगीज खाली और खत्म न होगा.

३. ए इन्सान जब तू किसी मामले मे बेबस हो जाये तो मुझे पुकार तू मुझे पायेगा, इसलिये कि तमाम चीजो का देने वाला और नेकियो का देने वाला मे हू.

४. ए इन्सान ये पक्की बात हे कि मे तुझको दोस्त रखता हू तो तू भी मेरा हो जा और मुझ ही को दोस्त रख.

५. ए इन्सान तू मुझसे बेखौफ ना हो जब तक कि तू पूल सिरात से न गुजर जाये.

६. ए इन्सान मैने तुझको मिट्टी, नुतफा, जमा हुवा खून, और लोथडे से पैदा किया और अपनी कामील कुदरत से तुझे पैदा करने मे आजीज नहीं हुवा, तो फिर दो रोटी देने मे किस तरह आजीज हू, फिर तू दूसरो से क्यू मांगता हे?

७. ए इन्सान मैने तमाम चीझे तेरे लिये पैदा की हे और तुझको अपनी इबादत के लिये, लेकिन तू उस चीझ मे फस गया जो तेरे ही लिये पैदा की थी और गैर की वजह से मुझसे दूरी इखतियार कर ली.

८. ए इन्सान हर शख्स अपने से कोई चीझ मांगता हे और मे तुझको तेरे लिये चाहता हू और तू मुझसे भागता हे.

९. ए इन्सान तू नफसानी खाहिशात की वजह से मुझसे नाराज़ हो जाता हे और कभी मेरी वजह से अपने नफस पर नाराज़ नहीं होता.

१०. तुझ पर मेरी इबादत ज़रूरी हे और मुझ पर तुझको देना मगर तू अपने फरीजे मे कोताही करता है और मे तुझे देने मे कभी कमी नहीं करता.

११. ए इन्सान तू आइन्दा की भी आज ही तलब

करता हे और मे तुझसे आइन्दा की इबादत नहीं चाहता.

१२. ए इन्सान जो कुछ मैने तुझको दिया हे अगर तू इस पर राजी हो जाये तो हमेशा आराम व राहत मे रहेगा और अगर तू इस पर राजी ना हो तो मे तुझ पर दुनिया की लालच को मुसल्लत कर दूंगा वो तुझको दर-दर की ठोकरे खिलायेगी, कुत्ते की तरह दरवाजो पर जलील करायेगी, और फिर भी जो चीझ तेरे लिये मुकद्दर हे इस्के इलावा कुछ ना पायेगा. (खुतबाते मसीहुल उम्मत)

हवाला: एक हज़ार अनमोल मोती उर्दु से मज़मून का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.